यीशु मसीह का चेला
भाग 2: प्रक्रिया
रविवार 15, मार्च 2020

<u>समीक्षा</u>

एक विश्वासी होने से लेकर चेला बनने तक की यात्रा
प्रभु यीशु ने हमें केवल विश्वासी बनने के लिए नहीं, बल्कि अपने चेले बनने के लिए बुलाया है।

महान आदेश
एक विद्यार्थी या शिष्य के रूप में होकर चेला बनना।
बपतिस्मा लेना
सिखाया जाना।
प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक में, हर एक विश्वासी एक चेला था!

चेले अपने शिक्षक का अनुसरण करते हैं। एक चेला वह है जो अपने शिक्षक जैसा बन रहा है।

एक चेला अपने शिक्षक का विद्यार्थी और अनुयायी होता है, जो अपने शिक्षक जैसा बनने के लिए पूरी तरह समर्पित होता है।

यीशु के चेलों के रूप में, हम उनके दिल को समझने, उनके मन को जानने, उनके उद्देश्यों के लिए जीने, उनके तरीके से जीवन जीने और उनके कामों को (जो वे करते) करने के लिए समर्पित हैं।

यीशु ने कहा, "*चेले के लिए अपने गुरु के जैसा होना ही बहुत है।*" हमारे उनके चेले होने का यह आवश्यक और पर्याप्त अंतिम लक्ष्य है—कि हम उनके जैसे बन जाएँ।

पिता की योजना

शिष्यता क्या नहीं है
शिष्यता नियमों का पालन करना नहीं है, क्या करें और क्या न करें।
शिष्यता केवल उन्हीं बातों को मानना ही नहीं है जो हम पसंद करते हैं।
शिष्यता कोई केवल कलीसिया में जुड़े रहने के लिए कोई कार्यक्रम नहीं है।

व्यावहारिक चुनौतियों पर विजय पाना
समय की कमी
जानकारी की अधिकता
उथलापन या बनावटीपन
सांसारिक खिंचाव

चेला होने के लिए यीशु मसीह ने क्या कहा

आज :

यीशु मसीह का चेला,
भाग 2: प्रक्रिया

यीशु को शिक्षक और स्वामी के रूप में स्वीकार करना

मत्ती 10:24,25
24 "चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं, और न दास अपने स्वामी से।
25 चेले का गुरु के, और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है। जब उन्होंने घर के स्वामी को शैतान कहा तो उसके घरवालों को क्या कुछ न कहेंगे!"

यूहन्ना 13:13,14
13 "तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो, और ठीक कहते हो, क्योंकि मैं हूँ।
14 यदि मैं ने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पाँव धोए, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पाँव धोना चाहिए।

यह ध्यान देना दिलचस्प है कि यीशु ने अपने और चेलों के बीच के संबंध को बताने के लिए किन शब्दों का उपयोग किया। चेले के लिए यीशु 'शिक्षक' (सिखाने वाले) और 'प्रभु' या 'स्वामी' (यूनानी शब्द '*कुरियोस*') जिसका अर्थ है-अधिकार में सर्वोच्च।

इसलिए, एक चेला न केवल अपने शिक्षक से सीखता है, बल्कि स्वामी के रूप में शिक्षक के प्रभुत्व और अधिकार के अधीन भी रहता है।

यीशु का चेला बनने के लिए केवल उनकी शिक्षाओं को सीख लेना ही काफी नहीं है। एक सच्चा चेला यीशु की प्रभुता को स्वीकार भी करता है, और अपने शिक्षक को स्वामी के रूप में सारा अधिकार भी देता है।

यीशु का चेला बनने की अपनी यात्रा में, हमें उन्हें शिक्षक और स्वामी दोनों के रूप में स्वीकार करना होगा। हमें उनकी शिक्षाओं को सीखने के साथ-साथ अपने जीवन में उनकी प्रभुता के अधीन होने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। यहीं पर बहुत से लोग असफल हो जाते हैं। हम उनकी शिक्षाओं को जानने के लिए तो उत्सुक रहते हैं, लेकिन उन्हें अपना स्वामी बनाने के लिए तैयार नहीं होते।

यीशु ने यह स्पष्ट कर दिया था कि *"कोई भी मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता"* (मत्ती 6:24)। यदि यीशु आपके स्वामी हैं, तो आपका कोई दूसरा स्वामी नहीं हो सकता। आपके जीवन पर केवल उन्हीं का सर्वोच्च अधिकार है और उनके चेले के रूप में आप केवल उन्हीं का अनुसरण करेंगे।

सिद्ध रूप से प्रशिक्षित होना

हमें एक चेले के रूप में पूर्ण रूप से प्रशिक्षण लेना चाहिए, ताकि हम अपने शिक्षक और अपने स्वामी के अनुसार बन पाए।

लुका 6:40
चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं, परन्तु जो कोई सिद्ध होगा, वह अपने गुरु के समान होगा।

यह शब्द "सिद्ध रूप से प्रशिक्षित" (यूनानी शब्द *'काटार्टिजो'*) का अर्थ है "योग्य या पूर्ण बनाना"। यह सही व्यवस्था और क्रमबद्धता को दर्शाता है, यह प्रगति के मार्ग की ओर संकेत करता है, और यह चरित्र तथा मंज़िल के बीच के गहरे संबंध को प्रकट करता है। यह इस बात की ओर इशारा करता है कि किसी व्यक्ति को किसी उद्देश्य या कार्यभार को पूरा करने के लिए योग्य, पूरी तरह से प्रशिक्षित और पूरी तरह से (तैयार) कर दिया गया है। अन्य बाइबिल अनुवाद 'काटार्टिजो' का अनुवाद पूरी तरह से प्रशिक्षित, पूरी तरह से सिखाया गया, अपना प्रशिक्षण पूरा कर चुके, या पूरी तरह से योग्य के रूप में करते हैं।

जब एक चेला पूरी तरह से और गहरयी से प्रशिक्षित हो जाता है, तब वह अपने गुरु के समान होगा (लूका 6:40)।

आइए हम उस प्रशिक्षण प्रक्रिया को समझें जिससे होकर शिक्षक और स्वामी अपने चेलों को ले जाते हैं। ऐसा करने के लिए, हम इस बात का अध्ययन करेंगे कि यीशु ने लोगों को क्या करने के लिए कहा था, यदि वे उनके चेले बनना चाहते थे।

हम इन पांच कथनों के साथ प्रशिक्षण प्रक्रिया की रूपरेखा तैयार करेंगे:
#1, उनकी उपस्थिति में प्रशिक्षण (यीशु के साथ रहना)
#2, उनके वचन का प्रशिक्षण (उनके वचन के अनुसार जीना)
#3, उनकी आत्मा का प्रशिक्षण (आत्मा के अधीन होना)
#4, संगति के माध्यम से प्रशिक्षण (अन्य चेलों के साथ संगति करना और उनकी सेवा करना)
#5, क्रूस का प्रशिक्षण (प्रतिदिन अपना क्रूस उठाना)

#1, उसकी उपस्थिति में प्रशिक्षण (यीशु के साथ होना)

मरकुस 3:14,15
14 तब उसने बारह पुरुषों को नियुक्त किया कि वे उसके साथ-साथ रहें, और वह उन्हें भेजे कि वे प्रचार करें,
15 और दुष्टात्माओं को निकालने का अधिकार रखें।

सुसमाचारों में हम देखते हैं कि यीशु बारह पुरुषों की पहचान करते हैं और उन्हें अपने सबसे करीबी चेले बनने के लिए बुलाते हैं, जिन्हें बारह प्रेरित भी कहा गया। उनकी पहली और तुरंत बुलाहट यह थी कि वह "उनके साथ रहे"। उसके बाद प्रभु उन्हें उन कामों को करने के लिए बाहर भेजते हैं, जो वे खुद कर रहे थे।

हम इसकी कल्पना इस तरह कर सकते हैं। यीशु ने उन्हें बुलाया और कहा: 'बस मेरे साथ रहो। मेरे साथ ठहरो। मेरे साथ समय बिताओ। जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ जाओ। जब मैं लोगों से बात करता हूँ तो

मुझे देखो। जब मैं चंगाई देता हूँ, छुटकारा देता हूँ और चमत्कार करता हूँ तो मुझे देखो। बस मेरे साथ रहो। और बाद में मैं तुम्हें बिल्कुल यही सब करने के लिए बाहर भेजूँगा'।

बाद में प्रेरितों की काम में हम इसको पढ़ते हैं:

प्रेरितों के काम 4:13
जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का साहस देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो आश्चर्य किया; फिर उनको पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं।

पतरस और यूहन्ना को शासकों, प्राचीनों, शास्त्रियों और महायाजक के सामने लाया गया। ये अगुवे पतरस और यूहन्ना की निडरता को देखकर दंग रह गए, क्योंकि वे "अनपढ़ और साधारण" लोग थे। वे केवल एक ही निष्कर्ष पर पहुँचे। ये लोग आज जो कुछ भी हैं, वे इसलिए हैं क्योंकि वे "यीशु के साथ रहे थे"। 'द पैशन ट्रांसलेशन' इसे इस तरह लिखता है: *"तब वे समझ गए कि केवल यीशु के साथ समय बिताने से ही उन पर ऐसा प्रभाव पड़ा था।"*

केवल यीशु के साथ समय बिताने से हम पर उनका "प्रभाव" पड़ेगा! वह हमें अपने स्वरूप में बदल देते हैं! जब हम उनके साथ समय बिताते हैं, तो हम उनके जैसे बन जाते हैं। इसके बाद जब हम संसार में जाते हैं तो हम उनके सामान जीते हैं, बोलते हैं और उन कामों को करते हैं जो वे करते इस पृथ्वी पर करते थे।

हमें प्रार्थना में, आराधना में, वचन में और निरंतर उनकी उपस्थिति का अनुभव करके उनके "साथ समय बिताना" चाहिए। ये एक चेले का दैनिक आत्मिक अनुशासन है। प्रभु यीशु खुद भी अक्सर अपने पिता के साथ अकेले रहने के लिए अलग चले जाते थे। इसी तरह, उनके चेलों के रूप में, हमें भी यीशु के साथ अकेले समय बिताने के लिए अपनी जिम्मेदारियों, चिंताओं और इस दुनिया के जीवन की व्यस्तता से खुद को अलग करना होगा।

चेला अपने गुरु से बड़ा या ऊपर नहीं होता (मत्ती 10:24)। इसका मतलब है कि चेले को उसी रास्ते पर चलना होगा जिस रास्ते पर उसका गुरु चला था। चेले के लिए कोई छोटा रास्ता या कोई अन्य तरीका नहीं है।

यहूदा और देमास-संसार का खिंचाव

इस बात को ध्यान में रखें कि यीशु के साथ समय बिताने वाले बारह प्रेरितों में से एक ने अंततः यीशु को धोखा दिया। यहूदा को केवल 30 चांदी के सिक्कों के लालच से बहकाया गया था (मत्ती 26:14-16)। इसी तरह, अपने अंतिम पत्र की अंतिम पंक्तियों में, प्रेरित पौलुस की पत्री में उदासी का एक भाव झलकता है जब वे अपने एक सहयोगी के बारे में बात करते हैं, *"क्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जानकार मुझे छोड़ दिया है, और थिस्सलुनीके को चला गया है..."* (2 तीमुथियुस 4:10)। हम उसी समय में जी रहे हैं जिसके बारे में प्रेरित ने चेतावनी दी थी—एक ऐसा समय जब भरमाने वाली आत्माएँ और दुष्टात्माओं की शिक्षाएँ लोगों को विश्वास से दूर ले जाएँगी (1 तीमुथियुस 4:1)। यहाँ संदेश यह है, **कोई भी बात आपको प्रभु यीशु से दूर न कर दे!**

मरियम-वचन और आराधना में आनंदित होना

एक अद्भुत उदाहरण लाजर और मार्था की बहन मरियम का है। लूका 10:38-42 में यह विवरण मिलता है कि जब यीशु उनके घर आए, तो मरियम ने केवल यीशु के पास बैठने और उनकी बात सुनने का चुनाव किया। हम लाज़र के बारे में कुछ नहीं पढ़ते, और मार्था प्रभु की सेवा करने में बहुत व्यस्त थी। यूहन्ना 12:1-8 में दर्ज एक अन्य अवसर पर, जब यीशु उनके घर आए, तो लाजर यीशु के साथ मेज पर बैठा था, मार्था फिर से सेवा करने में व्यस्त थी, लेकिन इस बार मरियम अपना सबसे अच्छा इत्र लेकर आई और उसने यीशु के पैरों पर मला। यह उस स्त्री के दो शक्तिशाली विवरण हैं जो यीशु को सुनना और उनकी आराधना करना पसंद करती थी—दोनों ही घटनाओं से बस यह ही पता चलता है की वह सिर्फ यीशु के "साथ रहना" चाहती थी!

उनकी उपस्थिति में मिलने वाले प्रशिक्षण को अपनाएं। यीशु के साथ रहें।

#2, उनके वचन का प्रशिक्षण (उनके वचन के अनुसार जीवन बिताएं)

यूहन्ना 8:31,32
31 तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, कहा, "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।
32 और तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।"

प्रभु यीशु ने उन लोगों को जो उन पर विश्वास करते हैं, अपने वचन में बने रहने का निर्देश दिया। यही बात उन्हें वास्तव में उनका चेला बनाएगी।

उनके वचन में बने रहना ही हमें सत्य को जानने की ओर ले जाता है। वह सत्य जिसे हम जानते हैं—सिर्फ वह नहीं जो हम सुनते हैं, बल्कि जिसे हम जानते हैं, जिसे हम अपनाते हैं और जिसका हम व्यक्तिगत रूप से स्वयं अनुभव करते हैं—वही वास्तव में हमें बदलता और स्वतंत्र करता है।

'बने रहना' (यूनानी शब्द *'मेनो'*) का अर्थ है किसी दिए गए स्थान पर ठहरना, निवास करना, टिके रहना। अन्य अनुवाद 'मेरे वचन में बने रहने' को इस प्रकार व्यक्त करते हैं: आज्ञा मानते रहना, निरंतर बने रहना, डटे रहना, मेरी शिक्षाओं पर चलना, जो मैं तुमसे कहता हूँ उसके अनुसार जीना, और जो कुछ मैंने सिखाया है उसमें बने रहना।

इस प्रकार, उनके वचन में बने रहने का अर्थ हर समय उनके वचन पर विश्वास करना और उसके अनुसार जीना है। उनका वचन हमारे जीने—विश्वास करने, सोचने, बोलने और कार्य करने—के तरीके का आधार बनता है।

एक चेला अपने गुरु के वचन पर विश्वास करता है और उसी के अनुसार जीता है (यूहन्ना 8:31)।

इफिसुस के अगुवों को अपने अंतिम शब्दों में, प्रेरित पौलुस ने यह चेतावनी दी थी:

प्रेरितों के काम 20:32
"और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूँ; जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है और सब पवित्र किए गए लोगों में साझी करके मीरास दे सकता है।

प्रेरित पौलुस ने उन्हें परमेश्वर के वचन को सौंप दिया। उन्होंने कहा कि यह वचन चेलों की आत्मिक उन्नति करने और हमें उस मीरास में चलाने के योग्य बनाता है, जो हमारी है।

उनके वचन के प्रशिक्षण को अपने और उनके वचन के अनुसार जियें।

#3, उनकी आत्मा का प्रशिक्षण (आत्मा के प्रति समर्पित होना)

युहन्ना 14:16-18,26
16 मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।
17 अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है; तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।
18 "मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूँगा; मैं तुम्हारे पास आता हूँ।
26 परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।

चेले के प्रशिक्षण का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा परमेश्वर की आत्मा का कार्य है। प्रभु यीशु ने अपने चेलों से पवित्र आत्मा के कार्य के बारे में बात की। यीशु ने पवित्र आत्मा को "दूसरा सहायक",(*अल्लोस पैराक्लीटोस*) कहा। 'एलोस' (*एलोस*) का अर्थ है बिल्कुल पहले वाले के समान ही दूसरा। उदाहरण के लिए: दो फल, दोनों संतरे (*एलोस*) बनाम एक सेब और एक संतरा (*हेटेरोस*)। यदि यीशु यहाँ शारीरिक रूप से उपस्थित होते, तो वे हमारे लिए जो कुछ भी होते, पवित्र आत्मा आज हमारे लिए वह सब कुछ है। पवित्र आत्मा यहाँ हमें वह सब कुछ सिखाने के लिए है जो यीशु चाहते हैं कि हम उनके चेलों के रूप में बढ़ते हुए सीखें।

हमें अपने भीतर पवित्र आत्मा के कार्य का स्वागत करना चाहिए। पवित्रात्मा हमारा मार्गदर्शन करते हैं, हमें सुधारते हैं, निर्देश देते हैं, सिखाते हैं और हमें प्रशिक्षित करते हैं, और इस सब का एकमात्र लक्ष्य हमें यीशु जैसा बनाना है।

2 कुरिन्थियों 3:18
"परंतु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जैसा दर्पण में, तो प्रभु के आत्मा के द्वारा हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।"

पवित्रात्मा के कार्य के द्वारा हम यीशु मसीह के स्वरूप में बदलते जा रहे हैं। परमेश्वर की आत्मा हमारे जीवन में मसीह जैसी कृपा और सद्गुणों का फल उत्पन्न करती है (गलातियों 5:22-23)।

यहेजकेल 47:1-12 में यहेजकेल एक दर्शन देखता है, जहाँ वह मंदिर से एक नदी बहती हुई देखता है। उसे उस नदी में ले जाया जाता है, पहले टखने तक गहरे पानी में, फिर घुटने तक, फिर कमर तक और फिर उसे नदी में और गहरे ले जाया गया जहाँ उसे तैरना पड़ा। नए नियम में हम जानते हैं कि नदी पवित्र आत्मा का एक प्रतीक है (यूहन्ना 7:37-39)। और विश्वासियों के रूप में हमें पवित्रआत्मा के कार्य की और अधिक गहराई के लिए स्वयं को खोलने की आवश्यकता है। आइए, पवित्रात्मा की नदी में और गहरे उतरें, जहाँ हम खुद को उस नदी के बहाव में सौंप देते हैं।

पवित्रात्मा के प्रशिक्षण को गले लगायें। पवित्रात्मा के अधीन हो जाएँ।

#4, संगति के माध्यम से प्रशिक्षण (अन्य चेलों के साथ संगति रखना और उनकी सेवा करना)

यूहन्ना 13:13,14
13 तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो, और ठीक कहते हो, क्योंकि मैं हूँ।
14 यदि मैं ने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पाँव धोए, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पाँव धोना चाहिए।

अपने क्रूसीकरण से ठीक पहले, प्रभु यीशु ने कुछ ऐसा किया जिसने उनके चेलों को चौंका दिया। उन्होंने अपने चेलों के पैर धोए। फिर उन्होंने उन्हें सिखाया कि उन्हें भी एक-दूसरे के पैर धोने चाहिए।

दूसरे के पैर धोना उनकी सेवा करने, उनकी देखभाल करने और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रतीक है।

एक चेले का प्रशिक्षण और मसीह के स्वरूप में बदलने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा तब सम्पूर्ण होता है जब हम अन्य चेलों की सेवा करना, उनकी देखभाल करना और उनकी सहायता करना सीखते हैं। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि हम अन्य चेलों के साथ अच्छे संबंध और अच्छी संगति में हैं।

अन्य चेलों की सेवा करने से ही हमारे भीतर घमंड, बड़प्पन की चाह, स्वार्थ, ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा जैसे कठोर बंधन टूटते हैं। हम अपने गुरु के समान बनते जाते हैं जो *"सेवा करवाने नहीं, बल्कि सेवा करने आया था"* (मत्ती 20:28)।

एक-दूसरे के साथ संगति रखना और सेवा करना प्रारंभिक कलीसिया का एक महत्वपूर्ण पहलू था।

प्रेरितों के काम 2:42-47
42 और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में, और रोटी तोड़ने में, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।
43 और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्‌भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे।
44 और सब विश्वास करने वाले इकट्ठा रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थीं।
45 और वे अपनी अपनी सम्पत्ति और सामान बेच-बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी, सब को बांट दिया करते थे।
46 और वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठा होते थे, और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सिधाई से भोजन किया करते थे।
47 और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।

हम सभी को एक स्थानीय कलीसिया का हिस्सा बनना सीखना चाहिए, वहाँ अपना स्थान और भूमिका ढूंढनी चाहिए और एक-दूसरे की सेवा करनी चाहिए। हमारा लक्ष्य अन्य चेलों के पैर धोना है। यीशु ने ऐसा किया, इसलिए हमें भी अवश्य करना चाहिए!

एक चेला यीशु के उदाहरण का अनुसरण करता है और अन्य चेलों के पैर धोता है (यूहन्ना 13:13-17)। यीशु का चेला अन्य चेलों का सेवक होता है (मत्ती 20:25-28)।

संगति के माध्यम से मिलने वाले प्रशिक्षण को अपनाएं। अन्य चेलों के साथ संगति रखें और उनकी सेवा करें।

#5, क्रूस का प्रशिक्षण (प्रतिदिन अपना क्रूस उठाना)

लूका 14:25-33
25जब बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी, तो उसने पीछे मुड़कर उनसे कहा,
26"यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहिनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता;
27और जो कोई अपना क्रूस न उठाए, और मेरे पीछे न आए, वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता।
28"तुम में से कौन है जो गढ़ बनाना चाहता हो, और पहले बैठकर खर्च न जोड़े कि पूरा करने की सामर्थ्य मेरे पास है कि नहीं?
29कहीं ऐसा न हो कि जब वह नींव डाल ले पर तैयार न कर सके, तो सब देखनेवाले यह कहकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगें,
30'यह मनुष्य बनाने तो लगा पर तैयार न कर सका?'
31या कौन ऐसा राजा है जो दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो, और पहले बैठकर विचार न कर ले कि जो बीस हज़ार लेकर मुझ पर चढ़ा आता है, क्या मैं दस हज़ार लेकर उसका सामना कर सकता हूँ, या नहीं?
32नहीं तो उसके दूर रहते ही वह दूतों को भेजकर मिलाप करना चाहेगा।
33इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।

यीशु ने साफ शब्दों में बताया कि उनका चेला बनने के लिए क्या बातें आवश्यक है। हम अक्सर इसे "शिष्यता की कीमत" कहते हैं, जिसे यीशु का चेला बनने के लिए चुकाना पड़ता है।
हम इसे इन तीन मुख्य बातों में समझ सकते हैं:
(A) एकनिष्ठ समर्पण (अखंड भक्ति)
(B) प्रतिदिन का क्रूस
(C) सब कुछ समर्पित करना

(A) अखंड भक्ति (प्रभु के प्रति पूर्ण समर्पण)

लूका 14:26
"यदि कोई मेरे पास आता है और अपने पिता, माता, पत्नी, बच्चों, भाइयों, बहनों वरन अपने प्राणों को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।"

प्रभु यीशु ने यह स्पष्ट किया कि यदि कोई उनका चेला बनना चाहता है, तो उसे यीशु से किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में कहीं अधिक प्रेम करना होगा।

एक चेले का अपने गुरु के प्रति प्रेम, उसके किसी भी सांसारिक रिश्ते के प्रेम से बढ़कर होना चाहिए (लूका 14:26)।

लूका 9:57-62
57 जब वे मार्ग में जा रहे थे, तो किसी ने उससे कहा, "जहाँ–जहाँ तू जाएगा, मैं तेरे पीछे हो लूँगा।"
58 यीशु ने उससे कहा, "लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नहीं।"
59 उसने दूसरे से कहा, "मेरे पीछे हो ले।" उसने कहा, "हे प्रभु, मुझे पहले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूँ।"
60 उसने उससे कहा, "मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दे, पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना।"
61 एक और ने भी कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे पीछे हो लूँगा; पर पहले मुझे जाने दे कि अपने घर के लोगों से विदा ले आऊँ।"
62 यीशु ने उस से कहा, "जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।"

उपरोक्त वचन बहुत कड़े हैं, लेकिन इनका संदेश स्पष्ट है। यीशु के प्रति हमारी भक्ति में हम दुचित्ते मन के या विचारों में बंटे हुए नहीं हो सकते।

(B) प्रतिदिन का क्रूस

लूका 14:27
"और जो कोई अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे नहीं आता, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।"

एक चेले को प्रतिदिन अपना क्रूस उठाना चाहिए (लूका 14:27)। क्रूस दुख-तकलीफ, अलगाव, त्याग और मृत्यु का प्रतीक है। चेला यह समझता है कि यही मार्ग फलदायी होने और आदर पाने का रास्ता है (यूहन्ना 12:24-26)।

मसीह के निमित्त दुख उठाना

रोमियों 5:3,4
3 केवल यही नहीं, वरन हम क्लेशों में भी घमंड करते हैं, यह जानकर कि क्लेश से धीरज उत्पन्न होता है;
4 और धीरज से खरापन, और खरेपन से आशा उत्पन्न होती है।

हमें मज़ाक बनाये जाने, झूठे आरोपों और सताव का सामना करना पड़ सकता है। हमें कठिनाइयों और असुविधाओं को सहना पड़ सकता है।

चेलों को अपने गुरु की तरह ही मज़ाक, झूठे आरोपों और सताव का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए (मत्ती 10:25)।

संसार के मोह-माया से अलगाव

गलातियों 6:14
पर ऐसा न हो कि मैं अन्य किसी बात का घमण्ड करूँ, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का, जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ।

यीशु के क्रूस के कारण, हम संसार के लिए मर चुके हैं और संसार हमारे लिए मर चुका है। हम इसी तरह जीने का चुनाव करते हैं—इस संसार के पाप और अधार्मिक सुख-विलासों के लिए मरे हुए व्यक्ति की तरह।

मसीह के लिए बलिदान होना

फिलिप्पियों 3:7
परन्तु जो बातें मेरे लाभ के लिए हैं, उसे मैंने मसीह के लिए हानि समझ लिया है।

हमें त्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए, चाहे वह उन चीज़ों को छोड़ना हो जो हमें मिल सकती हैं, या उन चीज़ों की ज़िम्मेदारी लेना हो जिनकी हमें ज़रूरत नहीं है। हम ऐसा त्याग और बलिदान की भावना से करते हैं।

मसीह के लिए फल लाने के लिए मरना

युहन्ना 12:24-26
24 मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है; परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।

25 **जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के लिये उस की रक्षा करेगा।**
26 **यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ मेरा सेवक भी होगा। यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा।**

(C) सब कुछ समर्पित करना

लूका 14:33
"इसी रीति से तुममें से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।

"एक चेले को अपने गुरु की खातिर अपना सब कुछ त्याग देना चाहिए (लूका 14:33)। इसका अर्थ यह है कि चेले का अपने गुरु के प्रति प्रेम, इस संसार की किसी भी अन्य वस्तु के प्रति उसके प्रेम या लगाव से कहीं बढ़कर है।

क्रूस के प्रशिक्षण को स्वीकार करें। प्रतिदिन अपना क्रूस उठाएं।

परिणाम का आंकलन करे–कीमत चुकाएं

लुका 14:28-32
28 **"तुम में से कौन है जो गढ़ बनाना चाहता हो, और पहले बैठकर खर्च न जोड़े कि पूरा करने की सामर्थ्य मेरे पास है कि नहीं?**
29 **कहीं ऐसा न हो कि जब वह नींव डाल ले पर तैयार न कर सके, तो सब देखनेवाले यह कहकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगें,**
30 **'यह मनुष्य बनाने तो लगा पर तैयार न कर सका?'**
31 **या कौन ऐसा राजा है जो दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो, और पहले बैठकर विचार न कर ले कि जो बीस हज़ार लेकर मुझ पर चढ़ा आता है, क्या मैं दस हज़ार लेकर उसका सामना कर सकता हूँ, या नहीं?**
32 **नहीं तो उसके दूर रहते ही वह दूतों को भेजकर मिलाप करना चाहेगा।**

सारांश

प्रशिक्षण की प्रक्रिया:
#1, उनकी उपस्थिति में प्रशिक्षण (यीशु के साथ रहना)
#2, उनके वचन का प्रशिक्षण (उनके वचन के अनुसार जीना)
#3, उनकी आत्मा का प्रशिक्षण (पवित्र आत्मा के प्रति समर्पित होना)
#4, संगति के माध्यम से प्रशिक्षण (अन्य चेलों के साथ संगति करना और उनकी सेवा करना)
#5, क्रूस का प्रशिक्षण (प्रतिदिन अपना क्रूस उठाना)

जैसे-जैसे हम अपने जीवन में उनकी इस प्रशिक्षण प्रक्रिया के प्रति समर्पित होते हैं, हम उनके चेलों के रूप में अपने गुरु और स्वामी के समान बनते जाएँगे!

<u>सेवा का समय | उद्धार का बुलावा</u>

परमेश्वर के लिए कुछ भी बहुत कठिन नहीं है। परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

यीशु मसीह की घोषणा उद्धारकर्ता, चंगा करने वाले, छुटकारा देने वाले और चमत्कार करने वाले के रूप में करें।
वह कल, आज और युगानुयुग एक समान है।

पवित्र आत्मा की सामर्थ्य और पवित्र आत्मा के सभी वरदान आज हमारे लिए उपलब्ध हैं।
हमें उन कामों को करने का अधिकार (आज्ञा) दिया गया है जो उन्होंने किए, और यहाँ तक कि उनसे भी बड़े काम करने का।
हमें विश्वास के साथ उनके पास आना चाहिए और हम इसे प्राप्त करेंगे।
लोगों को चंगाई, छुटकारा और चमत्कार प्राप्त करने के लिए प्रार्थना (सेवा) करें।गवाहियाँ लें।
पश्चाताप और उद्धार के लिए प्रार्थना में अगुवाई करें।

लाइफ़ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

रविवार 15, मार्च 2020
शु मसीह का चेला
भाग 2: प्रक्रिया

यह लाइफ ग्रुप चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के संदेश के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन का करने वाला बन रहा है और अपने जीवन को परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। लाइफ ग्रुप की सभा सामान्यतः 2 घंटे की होती है। प्रत्येक लाइफ ग्रुप में लगभग 12-15 लोग होते हैं।

तैयारी

लाइफ ग्रुप बैठक की तैयारी के लिए, आप Sermon Key Points (पाँच मिनट में संदेश का सार) या पूरा रविवार का संदेश सुन सकते हैं। आप रविवार के संदेश के नोट्स भी देख सकते हैं। यह सभी "All Peoples Church Bangalore-ऑल पीपल्स चर्च बैंगलोर" मोबाइल ऐप में या ऑनलाइन **apcwo.org/sermons** पर उपलब्ध हैं। लाइफ ग्रुप बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत

लाइफ ग्रुप बैठक की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से हो सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें

निम्नलिखित पवित्रशास्त्र के अंशों को पढ़ें: *लूका 6:40*

एक साथ मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें

कृपया एक साथ मिलकर इनमें से कुछ प्रश्नों पर चर्चा करें, और लोगों को अपने विचार साझा करने का समय दें। हम सामूहिक चर्चा के दौरान प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करे कि जो उन्होंने अपने व्यक्तिगत अध्ययन से सीखा है उसको लिखें।

1) *यहाँ यीशु मसीह का चेला बनने के पाँच चरणों वाली प्रशिक्षण प्रक्रिया (Training Process) पर चर्चा करें। हमारे दैनिक जीवन में हम इन्हें व्यावहारिक रीति से कैसे लागू कर सकते हैं इस पर बात करें:*

#1. उनकी उपस्थिति में प्रशिक्षण (यीशु के साथ रहना)-मरकुस 3:14-15

#2. उनके वचन का प्रशिक्षण (उनके वचन के अनुसार जीना)-यूहन्ना 8:31-32
#3. उनकी आत्मा का प्रशिक्षण (पवित्र आत्मा के प्रति समर्पित होना)-यूहन्ना 14:16-18, 26
#4. संगति के माध्यम से प्रशिक्षण (अन्य चेलों के साथ संगति और सेवा करना)-यूहन्ना 13:13-14
#5. क्रूस का प्रशिक्षण (प्रतिदिन अपना क्रूस उठाना)-लूका 14:25-33

यदि समय अनुमति दे, तो प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम तीन मिनट) लेकर एक या दो मुख्य सीख साझा करे और यह बताए कि वे इसे अपने विशिष्ट जीवन परिस्थितियों में कैसे लागू होते हुए देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करते हुए संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन से संबंधित कुछ भी साझा करे—जो कुछ परमेश्वर उन्हें सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही, या कोई विशेष चुनौती जिसके लिए वे प्रार्थना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें—प्रार्थना और सेवकाई के द्वारा

दो या तीन लोगों के छोटे समूहों में बँट जाएँ और बारी-बारी से आज जो सीखा गया है उसके प्रकाश में परमेश्वर को धन्यवाद दें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की अगुवाई सुनें। पवित्र आत्मा के वरदानों के बहने की अपेक्षा रखें—चंगाई, चमत्कारों की रिहाई, भविष्यवाणी आदि के द्वारा।

पुनः एकत्रित हों और इन विषयों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1) *परिवारों की सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए*
2) *कलीसिया के रूप में हम पर परमेश्वर के पवित्र आत्मा का एक शक्तिशाली उंडेलाव हो, और हमारे द्वारा हमारे नगर और राष्ट्र में बहुतों को आशीष मिले। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे नगर और राष्ट्र को बदल सकता है।*
3) *BUILD TO IMPACT (प्रभाव के लिए निर्माण करें) परियोजना के लिए—भूमि की खोज और अधिग्रहण की प्रक्रिया में परमेश्वर के हाथ की अगुवाई के लिए, और इस परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक वित्तीय प्रावधान के लिए।*

अंत में मिलकर परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए समाप्त करें।

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।
यूट्यूब: https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/Hindi
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org